अनुवादक रामविलास शर्मा (1933—1979)

"Karl Marx said somewhere that 'the thief, the translator and the seller' were necessary for nineteenth-century European colonial enterprise and that all the three categories were volunteers from among the people undergoing colonization. This harsh but undeniable charge will become a little more palatable to us when we reflect that one of the more positive aspects of the colonial situation was the beginning of inter-cultural relationships between diverse people, which the twentieth century has learned to value."[1]

"The politics of translation also concerns translation directions, i.e. the choice of source and target languages. The fact that English has become the dominant language in translation is primarily a political fact."[2]

डा रामविलास शर्मा के अनुवाद-कर्म का आरम्भ विवेकानन्द के 'भक्ति और वेदांत'(1933) से होता है और अंत मार्क्स के 'दास कैपिटल'खंड दो (1979) से।ये दो कृतियाँ ही नहीं बल्कि उनकी अन्य सभी अनूदित रचनाएँ अँग्रेजी से अनूदित की गई हैं।स्वामी विवेकानन्द की भारतीय अंग्रेजी को छोड़ दें तो बाकी सभी अनुवाद, अनुवाद के अनुवाद हैं ;जिसमें मार्क्स की जर्मन, स्तालिन की रूसी ,माओ की चीनी,वाप्स्तारोव की बुल्गेरियाई की खुश्बू कितनी बची होगी, कहना कठिन नहीं है ! एक औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक स्थिति में,जिसमें रामविलास शर्मा का सम्पूर्ण जीवन गुजरा ;इसे एक लाक्षणिक नमूने के तौर पर भी देखा जा सकता है ।

रामविलास शर्मा की पहली प्रकाशित रचना 'भक्ति और वेदांत'है जो सन 1933में प्रकाशित हुई ---यह सिर्फ उनके अनुवाद की ही पहली किताब नहीं है बल्कि उनकी लंबी साहित्यिक यात्रा की शुरूआत ही इससे होती है ।यह यात्रा कैसे शुरू हुई,लेखक के स्वर में ही सुनें ," जब मैं बी.ए. आनर्स फाइनल में पढ़ रहा था ...इन्द्रदत्त शर्मा को पैसों की जरूरत थी ।उन्होंने एक प्रकाशक का पता लगाया जो चार आने या आठ आने पेज देकर स्वामी विवेकानन्द के कुछ व्याख्यानों का अनुवाद कराना चाहता था ।इन्द्रदत्त ने मुझसे कहा कि यह काम तुम ले लो,मुझे तो अनुवाद करना आता नहीं,मेरी हिन्दी अच्छी नहीं है ।मैंने तीन व्याख्यानों का अनुवाद किया और वे 'भक्ति और वेदांत' नाम से प्रकाशित हुए ।प्रकाशक सरस्वती पुस्तक भंडार नाम का संस्थान था ।आगे चलकर उन्होंने मुझसे स्वामी विवेकानन्द की दो और पुस्तकों का अनुवाद कराया ।एक थी--- 'कर्मयोग',दूसरी थी 'राजयोग' ।ये पहली पुस्तकें थी जिनमें मेरा नाम छपा था ।" [3] यहाँ यह जोड़ना जरूरी है कि 'भक्ति और वेदांत' में विवेकानन्द के तीन नहीं बल्कि चार व्याख्यानों के अनुवाद हैं और उन्होंने इसके अलावे दो नहीं बल्कि तीन पुस्तकों का अनुवाद किया था;यह अलग बात है कि जब यह यह पुनर्प्रकाशित हुआ तब 'राजयोग' में ही 'पतंजलि के योगसूत्र' को भी शामिल कर लिया गया था।

पहली रचना विवेकानन्द के चार व्याख्यानों के अनुवाद 'भक्ति और वेदांत' के गद्य पर ध्यान दें तो इसकी परिपक्वता ध्यान खींचती है विशेषकर तब और भी जब हमें यह पता चलता है कि यह अनुवाद इक्कीस वर्षीय बी.ए. पास एक विद्यार्थी द्वारा किया गया है।1896 में न्यू योर्क में दिये गये विवेकानन्द

के व्याख्यान 'माय मास्टर' का अनुवाद पुस्तक का पहला लेख है।श्री रामकृष्ण परमहंस पर दिये गये मूल व्याख्यान का आरम्भ यूँ होता है: "Whenever virtue subsides and vice prevails, I come down to help mankind," declares Krishna, in the Bhagavad-Gita. Whenever this world of ours, on account of growth, on account of added circumstances, requires a new adjustment, a wave of power comes; and as a man is acting on two planes, the spiritual and the material, waves of adjustment come on both planes. On the one side, of the adjustment on the material plane, Europe has mainly been the basis during modern times; and of the adjustment on the other, the spiritual plane, Asia has been the basis throughout the history of the world." [4]

रामविलास जी का अनुवाद यूँ है:

" भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है---

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्यथानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

(जब संसार से पुण्य उठ जाता है और पाप की बढ़ती होती है, तब मनुष्य-जाति का उद्धार करने के लिए मैं अवतार लेता हूँ।)

"बहु-संख्या अथवा अन्य परिस्थितियों के कारण जब संसार में परिवर्तन की आवश्यकता होती है, तभी एक नवीन शक्ति का प्रादुर्भाव होता है।मनुष्य के दो कार्य क्षेत्र हैं --- एक पार्थिव,दूसरा आत्मिक; परिवर्तन दोनों ही क्षेत्रों में होता है ।आधुनिक समय में तो यूरोप ही पार्थिव क्रियाओं की रंगभूमि है ; पर प्राचीनतम काल में समस्त संसार में आत्मिक उन्नति का प्रधान केन्द्र भारतवर्ष ही रहा है ।" [5]

स्पष्ट ही यह अनुवाद शाब्दिक न होकर लक्ष्य भाषा की सांस्कृतिक अपेक्षाओं के मद्दे-नज़र हुआ है ----- अकारण नहीं कि गीता का मूल श्लोक तो यहाँ उद्धृत है ही, 'कम डाउन' अवतार और एशिया भारतवर्ष में भी रूपांतरित हो गया है । विवेकानन्द की अन्य कृतियों के अनुवाद में भी अनुवादक का यही भाव रहा है -----वे अंग्रेजी को ज्यादा से ज्यादा हिन्दी की संरचना में ढाल देना चाहते हैं।

गद्य-कृतियों में विवेकानन्द –साहित्य के बाद रामविलास जी ने अंग्रेजी से ही 'History of the Communist Party of the Soviet Union' (Bolsheviks) का हिन्दी अनुवाद 'सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास' नाम से सन 1943 में प्रस्तुत किया । अनूदित पुस्तक के पृष्ठ आवरण पर पुस्तक के बारे में परिचय कुछ यूँ दिया गया है: " का. स्तालिन द्वारा लिखित और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बो.) की केन्द्रीय समिति के एक आयोग द्वारा सम्पादित यह पुस्तक सोवियत संघ में सन 1938 में छपी थी ।यह पुस्तक सारे देशों के कम्युनिस्टों के लिए एक अनिवार्य पाठ्य-पुस्तक रही है और आगे भी हमेशा रहेगी । यह पुस्तक सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सोवियत संघ के मजदूर वर्ग द्वारा समाजवाद के लिए सफल संघर्ष और समाजवादी निर्माण के अनुभवों और सबका निचोड़ प्रस्तुत करती है । यह प्रत्येक कम्युनिस्ट को ठोस परिस्थितियों में मार्क्सवाद को कैसे लागू किया जाय, की शिक्षा देती हैं । यह पुस्तक हमें सामाजिक विकास के नियमों के ज्ञान से लैस करती है और विश्व भर में साम्यवाद की अपरिहार्य विजय में विश्वास पैदा करती हैं ।पुस्तक में दिखाया गया है कि कैसे बोल्शेविक पार्टी की शक्तियाँ निम्न पूँजीवादी पार्टीयों,सभी प्रकार के अवसरवादियों,दोमुँही नीति वालों,आत्मसमर्पणवादियों तथा जनता के शत्रुओं के खिलाफ समझौताहीन और बुनियादी संघर्ष के बीच तपकर तैयार हुई ।यह पुस्तक साम्राज्यवाद की विचारधारा और पतित पूँजीवादी संस्कृति के खिलाफ संघर्ष में कम्युनिस्टों के लिए एक कारगर हथियार के समान है ।"[6]यह

पुस्तक पूरी तौर पर स्टालिन के लिए, स्टालिन के द्वारा, स्टालिन की पुस्तक है------ यहाँ स्टालिन के मत को न मानने वाले स्टालिन-विरोधी नहीं बल्कि क्रांति-विरोधी हैं । लेनिन भी यहाँ स्टालिन के मुँह से बोलते दिखाये गये हैं ।यह उदाहरण देखें: " जिस समय बोल्शेविक दो मोर्चे पर—विसर्जनवादियों के खिलाफ और बहिष्कारवादियों के खिलाफ --- डट कर संघर्ष कर रहे थे,उस समय त्रात्स्की मेंशेविक विसर्जनवादियों की मदद कर रहा था ।उस समय लेनिन ने उसे 'जूडास' त्रात्स्की कहा था ।त्रात्स्की ने वियना,(आस्ट्रिया) में लेखकों का एक गुट बनाया और वहाँ से,कहने को गुटबन्दी से अलग लेकिन वास्तव में,एक मेंशेविक अखबार निकालना शुरू किया ।उस समय लेनिन ने लिखा था:"त्रात्स्की का व्यवहार महापतित,अपनस्वार्थी और गुटबाज का है ।...वह मुँह से पार्टी का भक्त बनता है लेकिन उसका व्यवहार किसी भी गुटबाज से बदतर है ।" [7] यहाँ यह ध्यान देने वाली बात है कि लेनिन ने यह बात कहाँ कही,उसका कोई सन्दर्भ नहीं दिया गया है ; वैसे भी इस पुस्तक में न इंडैक्स है न बिब्लियोग्राफी ।अनुवादक ने जूडास को तारांकित कर जरूर यह बताया है ; "ईसा मसीह का एक शिष्य,जिसने चांदी के तीस टुकड़ों के लोभ में पड़ कर उन्हें रोमन सिपाहियों से पकड़वा दिया था" । दूसरी मिसाल अक्तूबर क्रांति के बाद 1918 की स्थिति पर इस टिप्पणी को देखें: "उस समय,त्रात्स्की और 'वाम पंथी कम्युनिस्टों' के इस पार्टी-विरोधी व्यवहार का ठीक सबब अभी पार्टी के सामने साफ न था ।लेकिन,अभी हाल में सोवियत-विरोधी 'दक्षिण पंथियों और त्रात्स्की पंथियों के गुट' पर (1938 से शुरू होने वाला) जो मुकद्दमा चला है,उससे मालूम हुआ है कि बुख़ारिन और उसके नेतृत्व में काम करने वाला 'वाम पंथी कम्युनिस्टों' का गुट त्रात्स्की और 'वाम पंथी' समाजवादियों के साथ उस समय गुप्त रूप से सोवियत सरकार के खिलाफ षड्यंत्र कर रहा था।अब पता चल गया है कि बुखारिन,त्रात्स्की और उनके साथी षडयंत्रकारियों ने तय कर लिया था कि ब्रेस्ट-लिटोवस्क की शांति भंग कर दी जाय; लेनिन,स्तालिन और स्वेर्दलोव को गिरफ्तार कर लिया जाय,उनकी हत्या कर दी जाये और एक नयी सरकार बनायी जाये जिसमें बुखारिनपंथी,त्रात्स्कीवादी और 'वाम पंथी' समाजवादी क्रांतिकारी हों।"[8] स्पष्ट ही इस पुस्तक को तत्कालीन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और रामविलास शर्मा के आग्रहों को समझने का दस्तावेज़ भी माना जा सकता है ।भाषा के स्तर पर देखें तो हिन्दी की सामान्य मार्क्सवादी आलोचना के तेवर,जार्गन और शब्दावली के उत्स भी इस अनुवाद में ढूँढे जा सकते हैं ।

रजनी पाम दत्त की पुस्तक 'इंडिया टूडे' का रामविलास जी द्वारा अनुवाद 1947 में 'आज का भारत' शीर्षक से जन प्रकाशन गृह,बम्बई से प्रकाशित हुआ ।दूसरे अंग्रेज़ी संस्करण की भूमिका में लेखक ने लिखा है:" यह पुस्तक पहले 1940 में इंगलैंड में प्रकाशित हुई थी ।परंतु हिन्दुस्तान में इसे उस समय ग़ैर-कानूनी क़रार दे दिया गया था ।हिटलर का हवाई हमला होने पर,इंगलैंड में इसकी जितनी भी प्रतियाँ थीं,सब बर्बाद हो गईं ।...

"अब हिन्दुस्तान में जन-प्रकाशन-गृह इसका नया संस्करण निकाल रहा है और मुझे अवसर मिला है कि मैं इसमें संसोधन कर सकूँ ।" [9]

सन'40 का संसोधित संस्करण एवं उसका रामविलास जी द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद एक साथ ही सन 47 में जन-प्रकाशन-गृह से प्रकाशित हुआ ।अनुदित "पुस्तक छोटे-छोटे पांच खंडों में अलग-अलग पांच पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित हुई थी ।" [10] भारतीय इतिहास के इस गौरव ग्रंथ के हिन्दी-अनुवाद का प्रकाशन निस्सन्देह समयोचित था ।

रामविलास शर्मा के इस अनुवाद की सबसे बड़ी विशेषता है इसकी सम्प्रेषणीयता ------ उन्होंने खड़ी बोली गद्य का वह रूप पा लिया था जिसमें साहित्येतर विषयों को बरतने में भी असहजता का बोध न हो; यूँ तो पूरी पुस्तक ही इसका उदाहरण है लेकिन यहाँ एक उद्धरण प्रस्तुत है :"

बंगाल की मालगुज़ारी का एक हिस्सा कई साल से इस काम के लिए अलग रखा जाता है कि उससे इंगलैंड भेजने के लिए माल खरीदा जा सके ।इसी को 'लागत पूँजी' कहते हैं! कम्पनी के ख़ास नौकर कितने क़ाबिल हैं,इस बात को परखने की आम कसौटी यह है कि लागत पूँजी की रक़म कितनी ज्यादा है । हिन्दुस्तान की ग़रीबी का मुख्य कारण यही है,लेकिन आमतौर पर इसे उसकी दौलत और खुशहाली का सबूत समझा जाता है ।...असल में हिन्दुस्तान के लिए यह कोई लाभदायक व्यापार नहीं था बल्कि उससे से ख़िराज वसूल किया जाता था,उसी पर यह मुलम्मा चढ़ाया गया है ...यह व्यापार नहीं है ।इंगलैंड और बंगाल के बीच में जो आमदरफ्त ज़ारी है,हम उसे व्यापार नहीं कह सकते ।उसकी जाँच करने से पता चलता है कि मालगुज़ारी की रक़म से 'लागत पूँजी' निकालने की प्रथा के कितने बुरे नतीजे हो सकते हैं ।" [11]

रजनी पाम दत्त की इस पुस्तक में लेखक की वक्तृत्व-कला के कई शानदार नमूने मौजूद हैं जिसे अनुवादक ने उतने ही शानदार ढ़ंग से अंतरित करने में सफलता प्राप्त की है ; यह उद्धरण देखें :"हिन्दुस्तान जाग रहा है ।हजारों वर्षों से विजेताओं की लहरें आ-आकर जिसकी भूमि को डुबोती रही हैं,आज वह अपने स्वाधीन अस्तित्व के लिए सचेत हो रहा है और संसार में अपनी स्वतंत्र भूमिका पूरी करना चाहता है । हमारे देखते-देखते इस जागरण का प्रकाश चारों ओर फैल गया है ।पिछले पच्चीस वर्षों में हिन्दुस्तान का कायापलट हो गया है ।उसके मार्ग में चाहे जो बाधाएँ हों, इस बात को आज सभी मनते हैं कि उसकी विजय और स्वाधीनता का दिन निकट है ।उसकी स्वाधीनता से साम्राज्यवाद के प्रभुत्व का सबसे बड़ा स्तम्भ ढ़ह जाएगा और दूसरे देशों को भी आजादी पाने में मदद मिलेगी ।"[12]

इस अनूदित पुस्तक में एक क्लासिकी किस्म का रचाव है जिसका अन्दाज़ हमें तब होता है जब हम इसे एक दूसरे अनुवाद के सामने रखकर देखते हैं।इस पुस्तक के दूसरे अध्याय का शीर्षक है 'हिन्दुस्तान की सम्पत्ति और उसकी ग़रीबी'; इसका आरम्भिक अंश है: " आज के हिन्दुस्तान की हालत में हमारे सामने दो बातें उभर कर आती हैं।पहली हिन्दुस्तान की संपत्ति है ---- यहाँ की प्राकृतिक संपत्ति,यहाँ के खनिज पदार्थ,धरती के गर्भ में छिपी हुई समृद्धि,जिसका पूर्ण उपयोग करके हिन्दुस्तान के चालीस करोड़ और उससे भी ज्यादा लोग सुख और आनन्द का जीवन बिता सकते हैं।दूसरी हिन्दुस्तान की ग़रीबी है,जिस ग़रीबी से हिन्दुस्तान की अधिकांश जनता पीड़ित है और पश्चिम में रहने वाले लोग जिसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।ये दो धरियाँ हैं जिनके बीच में आज के हिन्दस्तान की सामाजिक और राजनीतिक समस्याएँ चक्कर लगाती हैं।"[13] अब इसकी तुलना ओमप्रकाश संगल के अनुवाद से करें; इन्होंने दूसरे अध्याय के शीर्षक का अनुवाद किया है:'भारत की दौलत और उसकी ग़रीबी' तथा आरम्भ यूँ करते हैं, "भारत की मौजूदा हालत के बारे में दो बातें एकदम सामने आकर खड़ी हो जाती हैं ।पहली बात है भारत की दौलत---- उसके अतुलित साधन जिनमें उसकी आजकल की पूरी आबादी को,और उससे भी बड़ी आबादी को,सुखी और समृद्ध बनाने की शक्ति है।दूसरी बात है भारत की ग़रीबी ----- उसकी अधिकांश जनता की गरीब, ऐसी ग़रीबी जिसकी वे लोग कल्पना तक नहीं कर सकते जो पश्चिमी संसार की परिस्थितियों के आदी हैं । इन दो बातों के बीच में खड़ी है भारत की, मौजूदा सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था की समस्या।"[14] ऐसा जान पड़ता है कि यह अनुवाद सुनने के लिए लिखा गया हो,मानो सामने श्रोता है और भाषण दिया जा रहा है जबकि रामविलास शर्मा का अनुवाद ठहरकर पढ़ने के लिए है,पाठकसमुदाय के लिए है।

कालक्रमानुसार रामविलास शर्मा का अगला अनुवाद माओ त्से-तुंग ग्रंथावली के पहले भाग का अनुवाद है जिसका प्रकाशन पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस दिल्ली से अक्टूबर 1957 में हुआ।अन्य कृतियों की तरह इसमें भी अनुवादक की कोई भूमिका नहीं लिखी मिलती लेकिन प्रकाशक

का नोट जरूर मिलता है जिसमें बताया गया है कि, " यह चीनी संस्करण पर आधारित है जो चार भागों में प्रकाशित हुआ है।चीनी संस्करण का सम्पादन चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के एक कमीशन ने किया था और उसका पहला भाग 1951 में प्रकाशित हआ था।पहले भाग का अनुवाद दूसरे चीनी संस्करण के चौथे मुद्रण (जन प्रकाशन गृह,पेकिंग,जुलाई 1952) से किया गया है ।"[15] यहाँ प्रकाशकीय में सभी बातें बताई गईं है लेकिन यही नहीं बताया गया है कि अनुवाद किया गया है किस भाषा से; शायद यह मान लिया गया है कि हिन्दी के पाठक यह जानते हैं कि विदेशी भाषा से अनुवाद का मतलब है अंग्रेजी से अनुवाद! सम्भवत: यही कारण है कि चीन लोक गणराज्य से मुद्रित होने वाला 'माओ त्से-तुंग की संकलित रचनाएँ' (जिसका प्रथम संस्करण 1969 में निकला) में भी स्रोत भाषा की जानकारी नहीं दी गई है ;इसमें तो अनुवादक का भी नाम नहीं बताया गया है! यही हाल राहुल फाउण्डेशन,लखनऊ से 2004 में प्रकाशित होने वाला एक खण्ड में 'माओ त्से-तुंग की रचनाएँ,प्रतिनिधि चयन' का है जहाँ यह तो बताया गया है कि 1971 में चीन से प्रकाशित अंग्रेजी संस्करण से हिन्दी अनुवाद किया गया है लेकिन यहाँ भी अनुवादक का नाम बताना उचित नहीं समझा गया है।देखा जाय तो माओ के इन तीनो अनुवाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की माओ त्से-तुंग संकलित रचना प्रकाशन समिति द्वारा तैयार संकलन के अंग्रेजी अनुवाद पर ही आधारित हैं ; इसलिए यह देखना दिलचस्प होगा कि ये अनुवाद एक-दूसरे से किस रूप में भिन्न हैं ?अंग्रेजी में पुस्तक का पहला लेख है:'Analysis of the Classes in Chinese Society ' जिसका आरम्भिक अंश है:" *Who are our enemies? Who are our friends? This is a question of the first importance for the revolution. The basic reason why all previous revolutionary struggles in China achieved so little was their failure to unite with real friends in order to attack real enemies. A revolutionary party is the guide of the masses, and no revolution ever succeeds when the revolutionary party leads them astray. To ensure that we will definitely achieve success in our revolution and will not lead the masses astray, we must pay attention to uniting with our real friends in order to attack our real enemies. To distinguish real friends from real enemies, we must make a general analysis of the economic status of the various classes in Chinese society and of their respective attitudes towards the revolution." [16]*

रामविलास शर्मा इसका अनुवाद यूँ करते हैं:

"हमारे दुश्मन कौन हैं, और हमारे दोस्त कौन हैं? यह सवाल क्रांति में प्रमुख महत्व का है।चीन में पिछले तमाम क्रांतिकारी संघर्षों को बहुत कम सफलता मिली,इसका बुनियादी कारण यह है कि क्रांतिकारी लोग अपने वास्तविक दुश्मनों पर हमला करने के लिए अपने वास्तविक दोस्तों को एक न कर सके ।क्रांतिकारी पार्टी आम जनता की मार्गदर्शक होती है, और जब क्रांतिकारी पार्टी क्रांति को गलत राह पर ले जाय,तब कोई क्रांति कभी सफल नहीं हो सकती।यह बात पक्की करने के लिए कि हम अपनी क्रांति को गलत राह पर न ले जायेंगे,बल्कि निश्चित सफलता पायेंगे,हमें अपने वास्तविक दुश्मनों पर हमला करने के लिए अपने वास्तविक दोस्तों को एक करने पर ध्यान देना चाहिए ।वास्तविक दोस्तों को वास्तविक दुश्मनों से अलग पहचानने के लिए हमें चीनी समाज के विभिन्न वर्गों की आर्थिक स्थिति और क्रांति की तरफ उनके अपने- अपने रुख का आम विश्लेषण करना चाहिए। " [17]

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह,पेकिंग का अनुवाद देखें:

"हमारे दुश्मन कौन हैं? हमारे दोस्त कौन हैं? यह सवाल क्रांति में प्राथमिक महत्व का सवाल है।चीन में पिछले तमाम क्रांतिकारी संघर्षों को बहुत कम सफलता मिली।इसका बुनियादी कारण यह है कि वे अपने वास्तविक दुश्मनों पर हमला करने के लिए अपने वास्तविक दोस्तों के साथ एकता कायम नहीं कर सके ।क्रांतिकारी पार्टी आम जनता की रहनुमा होती है, और ऐसी कोई भी क्रांति कभी सफल नहीं हो सकती जिसमें क्रांतिकारी पार्टीआम जनता को गलत राह पर ले गई हो । इस बात की गारण्टी करने के लिए कि हम अपनी क्रांति में आम जनता को गलत राह पर न ले जाएं और निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करें,हमें अपने वास्तविक दुश्मनों पर हमला करने के लिए अपने वास्तविक दोस्तों के साथ एकता कायम करने की ओर ध्यान देना चाहिए ।वास्तविक दोस्तों और वास्तविक दुश्मनों के बीच फर्क करने के लिए, हमें चीनी समाज के विभिन्न वर्गों की आर्थिक स्थिति और क्रांति की तरफ उनके अपने- अपने रुख का आम विश्लेषण करना चाहिए।" [18]

अब राहुल फाउंडेशन का अनुवाद देखिए :

" हमारे दुश्मन कौन हैं? हमारे दोस्त कौन हैं? यह सवाल क्रांति में प्राथमिक महत्व का सवाल है।चीन में पिछले तमाम क्रांतिकारी संघर्षों को बहुत कम सफलता मिली।इसका बुनियादी कारण यह है कि वे अपने वास्तविक दुश्मनों पर हमला करने के लिए अपने वास्तविक दोस्तों के साथ एकता कायम नहीं कर सके ।क्रांतिकारी पार्टी आम जनता की रहनुमा होती है, और ऐसी कोई भी क्रांति कभी सफल नहीं हो सकती जिसमें क्रांतिकारी पार्टी आम जनता को गलत राह पर ले गई हो । इस बात की गारण्टी करने के लिए कि हम अपनी क्रांति में आम जनता को गलत राह पर न ले जाएं और निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करें,हमें अपने वास्तविक दुश्मनों पर हमला करने के लिए अपने वास्तविक दोस्तों के साथ एकता कायम करने की ओर ध्यान देना चाहिए ।वास्तविक दोस्तों और वास्तविक दुश्मनों के बीच फर्क करने के लिए, हमें चीनी समाज के विभिन्न वर्गों की आर्थिक स्थिति और क्रांति की तरफ उनके अपने- अपने रुख का आम विश्लेषण करना चाहिए।" [19]

आप पायेंगे कि दूसरे और तीसरे उद्धरण में रत्ती भर का भी अंतर नहीं है और इनका पहले उद्धरण से मिलान करने पर भी मामूली सा ही फर्क नज़र आता है ---सिवा योजक व कुछ शब्दों के,जैसे प्रमुख की जगह प्राथमिक,मार्गदर्शक की जगह रहनुमा,पक्की करने की जगह गारण्टी करने आदि।और यही बात पुस्तक के सभी लेखों के बारे में कहा जा सकता है---- यहाँ वहाँ कुछ शब्दों के छोटे-मोटे हेर-फेर हैं ,जैसे युद्ध-सरदार के बदले युद्धपति,कौम्प्रेडोर की जगह दलाल-पूँजीपति,अर्द्ध –आसामी के स्थान पर अर्द्ध-भूमिधर जैसे पद-बन्ध लेकिन ऐसा जान पड़ता है कि रामविलास शर्मा के अनुवाद को सामने रखकर सिर्फ उससे अंतर दिखाने के लिए ये छोटे-मोटे हेर फेर किये गये हैं; क्या यही कारण तो नहीं है कि इन दोनों अनुवादों में अनुवादक के नाम नहीं दिये गये हैं । अनुवाद के क्षेत्र में क्या इसे साहित्यिक चोरी का मामला नहीं कहा जा सकता है ?

कार्ल मार्क्स की कालजयी कृति 'दास कैपिटल' के दूसरे खंड का रामविलास शर्मा द्वारा प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद सन् 1979 में प्रगति प्रकाशन,मास्को से प्रकाशित हुआ ।इसमें प्रकाशक की ओर से कहा गया है कि," 'पूँजी' के दूसरे खण्ड का यह हिन्दी अनुवाद 1893 के जर्मन संस्करण पर आधारित अँग्रेजी संस्करण (विदेशी भाषा प्रकाशनगृह, मास्को,1956) से किया गया है ।"[20] अंग्रेजी संस्करण में पुस्तक का आरम्भ फ्रेडरिक एंगेल्स की इस भूमिका से होता है :

"It was no easy task to put the second book of Capital *in shape for publication, and do it in a way that on the one hand would make it a connected and as far as possible complete work, and on the other would represent exclusively the work of its author, not of its editor. The great number of available, mostly fragmentary, texts worked*

on added to the difficulties of this task. At best one single manuscript (No. IV) had been revised throughout and made ready for press. But the greater part had become obsolete through subsequent revision. The bulk of the material was not finally polished, in point of language, although in substance it was for the greater part fully worked out. The language was that in which Marx used to make his extracts: careless style full of colloquialisms, often containing coarsely humorous expressions and phrases interspersed with English and French technical terms or with whole sentences and even pages of English. Thoughts were jotted down as they developed in the brain of the author. Some parts of the argument would be fully treated, others of equal importance only indicated. Factual material for illustration would be collected, but barely arranged, much less worked out. At conclusions of chapters, in the author's anxiety to get to the next, there would often be only a few disjointed sentences to mark the further development here left incomplete. And finally there was the well-known handwriting which the author himself was sometimes unable to decipher." [21]

रामविलास शर्मा इसका अनुवाद यूँ करते हैं : " ' पूँजी' के दूसरे खंड को प्रकाशन के लिए उपयुक्त रूप देना आसान काम नहीं था।इस बात का ध्यान रखना था कि पुस्तक आंतरिक रूप से सम्बद्ध हो और जहाँ तक हो सके,अपने में पूर्ण हो ।साथ ही इस बात का ध्यान भी रखना था कि वह केवल उसके रचयिता की कृति हो,उसके सम्पादक की नहीं ।जो पाण्डुलिपियाँ सुलभ थीं और जिन्हें प्रेस के लिए तैयार किया जा रहा था,वे बहुत सी थीं और अधिकतर अपूर्ण थीं।उससे उपर्युक्त काम की कठिनाई और बढ़ गई।हद से हद उन्होंने केवल एक पाण्डुलिपि (4) को पूरी तरह संशोधित और प्रेस के लिए तैयार किया था ।लेकिन इसके बाद में संशोधन के कारण इसका अधिकतर भाग पुराना पड़ चुका था।भाषा की दृष्टि से अधिकांश सामग्री को अंतिम रूप से परिष्कृत नहीं किया गया था,यद्यपि विषय-वस्तु की दृष्टि से उसका बहुत सा हिस्सा पूरी तरह तैयार कर लिया गया था ।भाषा ऐसी ही थी,जैसी मार्क्स सामग्री संकलन करते समय इस्तेमाल करते थे:शैली में लापरवाही,बोलचाल के रूप बहुत ज्यादा,अक्सर रुक्ष,हास्यपूर्ण शब्दावली और मुहावरे,जहाँ-तहाँ अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषाओं के पारिभाषिक शब्द,और कभी-कभी तो पूरे वाक्य ही नहीं,पन्ने के पन्ने अंग्रेजी में लिखे हुए।लेखक के दिमाग़ में जैसे-जैसे विचार उठते थे और रूप ग्रहण करते थे,वैसे ही वह उन्हें लिखते जाते थे।कहीं तो वह पूरी बात कहते हैं और कहीं सिर्फ इशारे से काम लेते हैं,भले ही तर्क के विषय का महत्व दोनों जगह बराबर हो।उदाहरण के लिए,तथ्य सामग्री इकट्ठा तो की गई है,लेकिन बहुत कम ही व्यवस्थित की गई है,उसे परिष्कृत करने का काम और भी कम हुआ है। अध्याय समाप्त करने पर लेखक की अगला शुरू करने की जल्दी में अक्सर अंत में कुछ असम्बद्ध वाक्य ही हुआ करते थे,जो यह दिखाते थे कि यहाँ अपूर्ण छोड़ी सामग्री आगे और विकसित की जानी है ।और आखिरी कठिनाई उस प्रसिद्ध लिखावट की थी,जिसे कभी-कभी लेखक ख़ुद भी नहीं पढ़ पाते थे ।"[22] रामविलास जी यहाँ भी गद्यानुवाद में वही नीति अपनाते हैं जो उन्होंने विवेकानन्द,स्तालिन और माओ के अनुवाद में अपनाया था यानी अंग्रेजी की वाक्य-संरचना की अनदेखी करते हुए उसे वे हिन्दी की प्रकृति में ढाल देते हैं जिससे वह सहज सम्प्रेष्य हो सके। लेकिन समस्या तब आती है जब अर्थशास्त्र जैसे विषय की अवधारणाएँ और उसकी पारिभाषिक शब्दावली से सामना होता है:पूँजी के इस खण्ड का अंग्रेजी में शीर्षक है: 'The Process of Circulation of Capital' जिसका हिन्दी अनुवाद किया गया है:' पूंजी के परिचलन की प्रक्रिया'

जिसका पहला भाग 1 The Metamorphoses of Capital and Their Circuit का 'पूँजी के रूपांतरण और उनके परिपथ' तथा अध्याय एक 'The circuit of Money-capital' को द्रव्य पूँजी का परिपथ' कहा गया है ।अब इसके first stage M—C का आरम्भिक अंश अंग्रेजी में पढ़ें फिर उसके हिन्दी अनुवाद का अवलोकन करें :

"M — C represents the conversion of a sum of money into a sum of commodities; the purchaser transforms his money into commodities, the sellers transform their commodities into money. What renders this act of the general circulation of commodities simultaneously a functionally definite section in independent circuit of some individual capital is primarily not the form of the act but its material content, the specific use-character of the commodities which change places with the money. These commodities are on the one hand means of production, on the other labour-power, material and personal factors in the production of commodities whose specific nature must of course correspond to the special kind of articles to be manufactured. If we call labour-power L, and the means of production MP, then the sum of commodities to be bought, C, is equal to L + MP, or more briefly C^{L}_{MP} *M — C, considered as to its substance is therefore represented by M —* C^{L}_{MP} *that is to say M — C is composed of M — L and M — MP. The sum of money M is separated into two parts, one of which buys labour-power, the other means of production. These two series of purchases belong to entirely different markets, the one to the commodity-market proper, the other to the labour-market."* [23]

हिन्दी अनुवाद:

"पहली मंजिल । द्र--- मा

*द्र— मा से आशय यह है कि द्रव्य की एक मात्रा माल की एक मात्रा में परिवर्तित हुई है ।खरीदार अपना द्रव्य माल में रूपांतरित करता है,बेचनेवाला अपना माल द्रव्य में रूपांतरित करता है।जिस चीज से मालों का यह सामान्य परिचलन साथ ही कार्यत: किसी वैयक्तिक पूँजी के स्वतंत्र परिपथ का विशेष अनुभाग बन जाता है,वह परिचलन क्रिया का रूप नहीं,वरन उसकी भौतिक अंतर्वस्तु है,मालों का विशेष उपयोग लक्षण है,जो द्रव्य से स्थानांतरण करते हैं।ये माल एक ओर तो उत्पादन साधन हैं,दूसरी ओर श्रम शक्ति,माल उत्पादन के भौतिक और व्यक्तिगत उपादान हैं,जिनकी विशिष्ट प्रकृति निस्सन्देह बनायी जाने वाली वस्तुओं के अनुरूप होनी चाहिए ।यदि श्रम शक्ति को हम **श्र**,उत्पादन साधन को **उ सा** कहें,तब मालों की जो मात्रा खरीदनी है,वह **मा** बराबर होगी **श्र + उ सा** के अथवा और संक्षेप मे: **मा< श्र उ सा**।अत: जब हम **द्र— मा** के आंतरिक सारतत्व पर विचार करते हैं,तब हम उसे यों प्रकट करते हैं : **द्र-मा <श्र उ सा** अर्थात **द्र— मा** में **द्र— श्र** तथा **द्र-- उ सा** समाहित हैं।द्रव्य की मात्रा द्र दो हिस्सों में बंट जाती है।एक हिस्सा श्रम शक्ति खरीदने के लिए होता है,दूसरा हिस्सा उत्पादन साधन*

खरीदने के लिए।ख़रीदारी की इन दो श्रृंखलाओं का सम्बन्ध दो बिल्कुल भिन्न बाजारों से है ।एक का सम्बन्ध वास्तविक पण्य बाजार से है,और दूसरे का श्रम बाजार से है।" [24]

आप पायेंगे कि यह अनुवाद अटपटा तो है ही सहज सम्प्रेष्य भी नहीं है ----- कारण क्या है? एक तो मामला हिन्दी में विभिन्न अनुशासनों के पारिभाषिक शब्दों के मानकीकरण का न होना है और दूसरे अगर हो भी जाँय तो उसके व्यवहार एवं प्रचलन का है जिसके अभाव में चाहे शब्द कितने भी उपयुक्त क्यों न हों,अटपटे लगते हैं । पूँजी के प्रथम भाग का अनुवाद ओमप्रकाश संगल ने किया जो 1965 में प्रकाशित हुआ था ; जाहिर है सारे पारिभाषिक शब्द इसी भाग में अनूदित हुए जिसे बाद में प्रकाशित होने वाले अन्य दोनो खंडों में स्वीकार किया जाना था ----एकरूपता बनाये रखने के लिए। कुछ पारिभाषिक पद और पदबन्ध देखें : पण्य(Commodity) ,द्रव्य(money), बेशी मूल्य(surplus value), परिचलन (circulation), पण्यों की जड़-पूजा(fetishism of commodities) ,प्रकृतितंत्रवादी (physiocrat), प्रचल पूँजी(circulating capital),पूँजी के प्रचलन की प्रक्रिया(process of circulation of capital) ,पूँजी के रूपांतरण और उनके परिपथ (metamorphoses of capital and their circuits),लेखाकरण(book-keeping), परिवर्ती पूँजी का आवर्त(The Turnover of Variable Capital),आवर्त काल और आवर्त संख्या (turnover time and numbers of turnover)आदि । यहाँ सवाल यह उठता है कि क्या अनुवादक को यह प्रकाशकीय नीति बताई गई थी या नहीं ,ऐसा जान पड़ता है कि रामविलास शर्मा को यह बात नहीं बतायी गई तभी तो वे शिकायत करते हुए कहते हैं कि, ''जिस रूप में अनुवाद छपा, वह मेरा अनुवाद नहीं रह गया। यह बात लिखित रूप में आनी चाहिए। पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस से मेरे बहुत से अनुवाद छपे हैं और शुरू में मैंने इन्हीं के लिए अनुवाद करना शुरू किया था। बाद में पता चला कि अनुवाद मास्को से छपेगा तो मैंने मना नहीं किया। लेकिन मुझे किसी ने यह नहीं बताया कि वे लोग मेरी भाषा को बदल देंगे। उन्होंने भाषा का सुधार करके इसमें पारिभाषिक शब्दावली रख दी। उस अनुवाद को मैं खुद ही नहीं समझता तो दूसरा क्या समझेगा। उस अनुवाद को मेरा अनुवाद न मानें और यह बात अच्छी तरह नोट कर लें।''[25]आज हमलोगों के पास यह जानने का कोई साधन नहीं कि रामविलास जी की मूल अनूदित कृति कैसी थी मगर इस उपलब्ध अनुवाद के आधार पर अगर कोई रामविलास शर्मा का मूल्यांकन करेगा तो वह सम्भवत: उसी निष्कर्ष पर पहुँचेगा जिस पर गिरीश मिश्र जैसे अर्थशास्त्री पहुँचते हैं: "मार्क्स की रचना 'पूंजी' भाग दो का उनका अनुवाद भयावह है। सामान्य तौर पर क्लैसिकल अर्थशास्त्र का और विशेष तौर पर मार्क्स के रवैये का अज्ञान इससे साफ झलकता है। मार्क्स की शब्दावली की अर्थच्छायाओं के प्रति अस्पष्टता भी जाहिर होती है।" [26]

रामविलास जी ने गद्य में ही ज्यादा अनुवाद किए ------कविताओं के अनुवाद अपेक्षाकृत कम ; कुल मिलाकर उनतीस कविताओं के अनुवाद उन्होंने किए---- जिसमें निकोला वप्सारोव की छब्बीस, विवेकानन्द की दो तथा काजी नज़रूल की एक कविता शामिल है ।उन्होंने स्वयं कहा है कि "अधिकतर अनुवाद मैंने राजनीतिक ग्रंथों का किया है और कम्युनिस्ट पार्टी के लिये किया है।कुछ कविताओं का अनुवाद मित्रों के आग्रह पर किया है। जैसे नजरूल इस्लाम की 'विद्रोही' कविता का अनुवाद अथवा वप्सारोव (बल्गारिया के क्रांतिकारी कवि) की रचनाओं का अनुवाद। कुछ कविताएँ मैंने निराला जी के साथ ऐसे ही विवाद करते समय अनुवादित कर दी।इनमें स्वामी विवेकानन्द का सन्यासी वाला गीत है।" [27] द सौंग आव सन्यासिन का आरम्भ विवेकानन्द यूँ करते हैं:

Wake up the note! The song that had its birth
Far off, where worldly taint could never reach;
In mountain caves, and glades of forest deep,
Whose calm no sigh for lust or wealth or fame
Could ever dare to break; where rolled the stream
Of knowledge, truth, and bliss that follows both.
Sing high that note, Sannyasin bold! Say—
"Om tat sat, Om!"

Strike off thy fetters! Bonds that bind thee down,
Of shining gold, or darker, baser ore;
Love, hate—good, bad—and all the dual throng.
Know slave is slave, caressed or whipped, not free;
For fetters thou' of gold, are not less strong to bind.
Then off with them Sannyasin bold! Say—
"Om tat sat, Om!" [28]

रामविलास जी का अनुवाद यूँ है:

"गाओ फिर गान! वह तान जो उठी थी कभी
दूर,विश्व-वासना से दूर,किसी घन अति
वन की उपत्यका में,तुंग-गिरि-कन्दरा में;
शांति जहाँ की न कभी भंग कर पाई आह
कंचन या कामिनी की; बही जहाँ तरंगिनी
सत्य,ज्ञान,उभयानुगामी चिदानन्द की भी।
गाओ वही गान आज उच्च स्वर भर धीर,
सन्यासी वीर कहो, "ओम् तत् सत् ओम्" !

छिन्न करो बन्धन ये,कांतिमान स्वर्ण के या
तुच्छ किसी धातु के जो बांध रहे बार-बार,--
स्नेह-घृणा शुभाशुभ द्वन्द्व के समूह मन्द;
जानो दास दास ही समादृत तिरस्कृत वा,
मुक्त नहीं; बन्धन सुवर्ण के भी होते नहीं
बाँधने को कभी अकठिनतर; इसीलिए
दूर करो उन्हें आज; उच्च : स्वर भर धीर,
सन्यासी वीर,कहो, "ओम् तत् सत् ओम्" !" [29]

इस अनुवाद में रामविलास जी शब्द पर ध्यान देने के बजाय कविता के समग्र ओज को पकड़ने के प्रति ज्यादा सचेत दिखाई पड़ते हैं। निराला-काव्य से प्रेरणा ग्रहण करते हुए यहाँ वे कवित्त का आधार लेते हैं---- सोलह अक्षरों वाली पंक्ति में।बाद में उन्होंने स्वीकार भी किया था कि, "स्वामी विवेकानन्द की

दोनों कविताओं का अनुवाद,... कवित्त का आधार लिये हैं ।...'सन्यासी का गीत' और उमर खय्याम (फिट्जेराल्ड संस्करण) की रूबाइयों की विषयवस्तु में बड़ा अंतर है ।दोनों के अनुवाद निराला को यह दिखाने के लिए किये थे कि ओजस्वी प्रवाह के लिए हिन्दी में सोलह अक्षरों वाली पंक्ति का प्रयोग किया जा सकता है।"[30] कहना न होगा कि सोलह अक्षरों वाली पंक्तियों का प्रयोग करते हुए यहाँ वे सचमुच ओजस्वी प्रवाह लाने में एक हद तक सफल हुए हैं लेकिन जब हम इस अनुवाद की तुलना पंत जी के किये अनुवाद से करते हैं तब हम पाते हैं कि ओज से भी उपर उदात्तता का एक सोपान होता है जहाँ रामविलास शर्मा नहीं पहुँच पाते और पंत जी पहुँच जाते हैं ।रामविलास शर्मा से एक वर्ष पहले सुमित्रानन्दन पंत ने सन'35 में इसका अनुवाद किया था और यह कविता उनके सातवें काव्य-संकलन 'स्वर्णधूलि' में संकलित है ।आज यह देखना दिलचस्प हो सकता है कि छायावाद के एक वरिष्ठ कवि और एक उभरते नये कवि की सम्वेदना और शिल्प कैसे अनुवाद को प्रभावित करती है ।विवेकानन्द की कविता के आरम्भिक दो बन्द का पंत जी यूँ अनुवाद करते हैं :

"छेड़ो हे वह गान अंतस्तोद्भव अकल्प वह गान
विश्व ताप से शून्य गह्वरों में गिरि के अम्लान
निभृत अरण्य देशों में जिसका शुचि जन्म स्थान
जिनकी शांति न कनक काम यश लिप्सा का निःश्वास
भंग कर सका जहाँ प्रवाहित सत् चित् की अविलास
स्त्रोतस्विनी उमड़ता जिसमें बह आनन्द अनास
गाओ बढ़ वह गान वीर सन्यासी गूँजे व्योम
ओम् तत्सत् ओम्!
तोड़ो सब श्रृंखला उन्हें निज जीवन बन्धन जान
हों उज्वल कांचन के अथवा क्षुद्र धातु के म्लान
प्रेम घृणा सद् असद् सभी ये द्वन्द्वों के संधान!
दास सदा ही दास समान किंवा ताड़ित परतंत्र
स्वर्ण निगड़ होने से क्या वे सुदृढ़ न बंधन यंत्र?
अतः उन्हें सन्यासी तोड़ो छिन्न करो गा मंत्र
ओम् तत्सत् ओम्!" [31]

स्पष्ट ही छायावाद की चिरपरिचित उदात्त भावभंगिमा और विषयानुकूल संस्कृतनिष्ठ शब्दावली मूल के भाव को ज्यादा उँची भाव-भूमि पर स्थापित करने में सफल हुई है।दूसरी कविता 'जाग्रत देश से !' मूल अंग्रजी 'टु दि अवेकंड इंडिया' का अनुवाद है। कहा जाता है कि विवेकानन्द ने स्वामी स्वरूपानन्द के सम्पादन मे निकलने वाली पत्रिका'प्रबुद्ध भारत' के प्रथम अंक के लिए इसे एक पत्र के रूप में लिखा था ।आरम्भिक अंश है:

" Once more awake!
For sleep it was, not death, to bring thee life
Anew, and rest to lotus-eyes for visions
Daring yet. The world in need awaits, O Truth!
No death for thee!" [32]

रामविलास जी इसका अनुवाद यूँ करते हैं:

"जागो फिर एक बार!
निद्रा वह, मृत्यु नहीं;पाते जिससे नवीन
जीवन,विश्राम नवल कमल-नयनों में,
देखने को स्वप्न और भी महान्।अहे सत्य,
नहीं तुम्हें मृत्यु; देखो बाट जोहता संसार!" [33]

हिन्दी कविता के पाठक यहाँ निराला की विख्यात कविता'जागो फिर एक बार'(परिमल,1929) को बगैर याद किये नहीं रह सकते लेकिन मूल में जहाँ सत्य को सम्बोधित कर यह कहा जा रहा है कि जरूरतमंद संसार तुम्हारी प्रतीक्षा में है और तुम अमर हो ; अनुवाद में '*अहे सत्य,/नहीं तुम्हें मृत्यु; देखो बाट जोहता संसार!*' कुछ अस्पष्ट सा हो गया है।

रामविलास जी काजी नज़रूल की प्रख्यात कविता 'विद्रोही' का स्वतंत्र रूपांतर 1937 में प्रस्तुत करते हैं :

"मैं विद्रोही,मैं चिर अधीर !
मैं शास्ति शांति का नाश,त्रास मैं क्रांतिरूप ;
मैं रणकामी,चिर सजग वीर !
मैं महाविश्व के महाकाश का वक्ष तोड़,
मैं रवि शशि ग्रह उपग्रह पीछे नक्षत्र छोड़,
मैं महर्लोक स्वर्लोक भेद शतकोटि लोक,
पहुँचा अलोक के लोक,त्रस्त प्रभु को शंकित करता सशोक;
मैं वसुन्धरा का उर विदार
मैं चिर विस्मय निकला उसमें से चमत्कार,
है अग्नि शिखाओं का पहनाया जिसे रुद्र ने कंठहार ।
मैं चिर गर्वोन्नत शीश, हेर नतशीश जिसे
उत्तुंग हिमाचल श्रृंग धीर ।
मैं विद्रोही,मैं चिर अधीर !" [34]

मूल कविता का आरम्भिक बन्द यह है:

बोलो बीर -----
बोलो उन्नत मम शिर!
शिर निहारि आमार,नत शिर! अए शिखर हिमाद्रिर ।
बोलो महाविश्वेर महाकाश फाड़ि
चन्द्र सूर्य ग्रह तारा छाड़ि
भूलोक,दूयलोक,गोलोक भेदिया,
खुदार आसन 'आरस' छेदिया,
उठियाछि चिर-विस्मय आमि विधात्रीर !
मम ललाटे रूद्र भगवान ज्वाले राज-राजटीका दीप्त जयश्रीर !
बोलो बीर------

आमि चिर उन्नत शिर !" [35]

काजी नजरूल इस्लाम की यह प्रख्यात कविता वीरों को आह्वान करता हुआ एक उद् बोधन गान है ---- यहाँ मानो उमड़ते युवकों के विराट जन-समूह को सम्बोधित किया जा रहा हो ----'बोलो बीर ,बोलो कि हमारा शिर उँचा है' ; रामविलास शर्मा इसे एक नायक के नाटकीय गर्वोक्ति में बदल देते हैं ---- ' मैं विद्रोही,मैं चिर अधीर !' कविता में आगे 'मैं यह मैं वह'इतना ज्यादा है कि काव्य-नायक का यह बड़बोलापन उदात्तता की सृष्टि करने के बजाय मैं मैं की एक मिमियाहट बन कर रह जाता है । वैसे स्वतंत्र रूपांतर में यह मसला हमेशा ही विवादास्पद रहा है कि मूल से कितनी स्वतंत्रता और कितना रूपांतरण उचित माना जाय?

रामविलास शर्मा ने सिलसिलेवार रूप से बल्गारियाइ कवि निकोला वास्सारोव (1909—1942)की ही कविताओं का अनुवाद किया ।भूमिका में अनुवादक कहते हैं,"निकोला वस्सारोव बल्गारिया के राष्ट्रीय कवि हैं।उनकी रचनाओं में उनकी मातृभूमि का प्राकृतिक सौन्दर्य, जनता के मानवीय गुण , मजदूर वर्ग की कठिनाइयाँ और क्रांतिकारी जोश अच्छी तरह व्यक्त हुआ है ।...दूसरा महायुद्ध आरम्भ होने के बाद बल्गारिया का शासक वर्ग विदेशी फासिस्टों से मिल गया। वहाँ के क्रांतिकारी मजदूरों तथा अन्य देशभक्तों ने फासिस्टों के विरूद्ध सशस्त्र संघर्ष चलाया। 1942 में वस्सारोव पकड़ लिये गये और फासिस्टों ने उन्हें प्राणदण्ड दिया ।उनकी यह विजय क्षणिक थी ।सोवियत सेना और बल्गारिया की जनता ने उनका अंत कर दिया औए वस्सारोव के नवजीवन के सपने उनके देश में चरितार्थ हए।53 में विश्वशांति समिति ने उन्हें शांति पुरस्कार देकर उनकी स्मृति को श्रद्धांजलि चढ़ायी।"[36] भूमिका में और भी कई बातें बताई गई हैं लेकिन यह नहीं बताया गया कि हिन्दी अनुवाद किस भाषा से किया गया है ----- बहुत बाद में जब एक साक्षात्कार में उनसे पूछा गया कि क्या यह अनुवाद मूल भाषा से किया गया है तो उनका जवाब था: " बल्गारियन कविताओं की पुस्तक मुझे मिली अनुवाद कर लेने के बाद,लेकिन बल्गारियन भाषा रूसी से बहुत ज्यादा भिन्न नहीं है ।" अगले प्रश्न में जब यह पूछा गया कि जब आपने अनुवाद अंग्रेजी से किया और उसके बाद आपने मूल पढ़ा तो क्या आपको लगा कि अन्यथाकरण अधिक बढ़ गया है? रामविलास जी का जवाब था :" मैंने हर जगह तो मिला कर देखा नहीं लेकिन कुछ जगह मिला कर देखा तो कहीं तो मेरा अनुवाद अच्छा हो गया है और कहीं अँग्रेजी कविता अच्छी हो गई है ।"[37] स्पष्ट ही यह अनुवाद मूल बुल्गेरियाइ से न होकर अँग्रेजी से किया गया है ;इसीलिए अँग्रेजी अनुवाद के समक्ष रखकर इसे देखा जा सकता है। मृत्यु से कुछ ही दिन पहले 23 जुलाई 1942 में लिखित वस्सारोव की प्रसिद्ध 'विदा' कविता के अंग्रेजी अनुवाद 'On Parting' के पहले अंश '*To my Wife*' की पंक्तियाँ हैं:"*Sometimes I'll come when you're asleep,/ An unexpected visitor./ Don't leave me outside in the street, / Don't bar the door! / I'll enter quietly, softly sit/ And gaze upon you in the dark./ Then, when my eyes have gazed their fill, / I'll kiss you and depart.*" [38]

इस कविता का दूसरा भी अंश है लेकिन रामविलास जी ने सिर्फ इसी अंश का अनुवाद किया है : 'विदा ' (पत्नी के प्रति): "*दूर से चलता हुआ यात्री, अचानक, स्वप्न में यदि,/ देखने आउँ तुम्हें तो एक बार, यह न कह देना, अभी बाहर थमो तुम,/और भीतर बन्द कर लेना न द्वार ।/पास आकर बैठ जाउँगा,निहारुँगा तुम्हें चुपचाप,/चारो ओर होगा अन्धकार।/जब नयन भर देख लूँगा,स्नेह से चुम्बन*

करूँगा/ और चुपके से कहूँगा---नमस्कार ।"[39] अंग्रेजी अनुवाद में न 'दूर से चलता हुआ यात्री' का जिक्र है न अचानक स्वप्न में आने का बल्कि वहाँ 'मैं कभी आउँगा जब तुम सो रही होगी' वाला भाव है ।एक अन्य प्रसिद्ध कविता 'फैक्टरी' का आरम्भिक अंश देखें : "*A factory, Clouds of smoke above./ The people – simple,/The life – hard, boring./ Life with the mask and grease-paint off/Is a savage dog snarling./ You must tirelessly fight,/ Must be tough and persist,/To extract from the teeth/Of the angry,/bristling beast/ A crust."*[40] अब हिन्दी अनुवाद देखें : " *कारखाना ।धुएँ के बादल छाये हुए ।/लोग सीधे-सादे ।जिन्दगी कठोर,/बिना श्रृंगार के,/पागल कुत्ता मानो गुर्राये ।/लड़ो और लगातार जमकर लड़ो ।/सख्त हों तन और मन दोनों ।/जंगली जानवरों के दांतों से /रोटी का टुकड़ा तुम छीन लो ।* "[41]अंग्रेजी में जहाँ जीवन कठिन,उबाउ,मुखौटों वाला तथा मुलम्मा उतरा हुआ बताया गया है;हिन्दी में महज कठोर तथा बिना श्रृंगार के है और जंगली जानवर भी यहाँ क्रुद्ध नहीं हैं ।'इतिहास' नामक कविता का आरम्भ अँग्रेजी में यूँ किया गया है: "*History, will you mention us/ In your faded scroll?/ We worked in factories, offices –/ Our names were not well known./We worked in fields, smelled strongly/Of onion and sour bread./ Through thick moustaches angrily/We cursed the life we led."* [42] हिन्दी अनुवाद है*: क्या इतिहास के धुन्धले सफों पर/कहीं भी लिखा है हमारा नाम?/गुमनाम दफ्तरों, कल-कारखानों में/पिसते ही रहना है जिनका काम?/खपते रहे हम रोज ही खेतों में/खाकर बासी रोटियां और प्याज ।/लानत भेजते रहे जिन्दगी पर /कहते रहे---- इस पर गिरे गाज ।*[43] अँग्रेजी में जहाँ इतिहास को सीधे सम्बोधित करते हुए प्रत्यक्ष कथन (डायरेक्ट स्पीच) है , हिन्दी में उसे अप्रत्यक्ष कथन(इनडायरेक्ट स्पीच) में ढाल दिया गया है जिससे कविता का टोन बदला हुआ लगता है ---- अँग्रेजी अनुवाद का नायक इतिहास की आँख से आँख मिलाते हुए,मूँछ पर ताव देते हुए गुस्से से जिन्दगी को श्राप देता दिखता है जबकि हिन्दी अनुवाद में वह निरीह अन्दाज में,'इस पर गिरे गाज' कहकर महज अपनी भड़ास निकालकर शांत हो जाने वाला लगता है ।अनुवादक ने भूमिका में दावा किया था कि," अनुवाद में अनेक तरह के वृत्तों और शैलियों का सहारा लिया गया है।अधिक से अधिक कवि के भावों और शैली के गणों की रक्षा की जाय ।आशा है जिन लोगों ने निराला जी के 'परिमल' की रचनाएँ पढ़ी है,उन्हें यह अनुभव बहुत अटपटा न लगेगा।"[44] स्पष्ट ही यहाँ संकेत परिमल के छन्दों की ओर है तब सवाल यह उठता है कि क्या छन्द व तुकांतता के आग्रह के वशीभूत होकर प्रामाणिक काव्य –सम्वेदना को परिवर्तित करने की मजबूरी को क्या कहा जाय ?क्या अनुवाद पुनर्लेखन है?आन्द्रे लीफेवेरे ने अपने एक प्रख्यात अध्ययन में स्पष्ट किया है कि अनुवाद मूलत: एक प्रकार का पुनर्लेखन है और पुनर्लेखन चाहे उसका उद्देश्य कुछ भी हो एक विशेष विचारधारा एवं काव्य-शास्त्र को अभिव्यक्त करता है ।[45] रामविलास शर्मा की विचारधारा अस्पष्ट कभी नहीं रही ----- विवेकानन्द के अनुवाद को छोड़ दें तो उनके सारे अनुवाद मार्क्सवादी विचारधारा को पुष्ट करने के लिए किये गये हैं ।अकारण नहीं है कि ये सारे अनुवाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रकाशन गृह से छपे और जैसा कि अनुवादक की आत्म-स्वीकृति है कि उन्होंने उसके लिए कभी पैसे नहीं लिए ।[46] और जहाँ तक काव्य-शास्त्र का सवाल है तो वह युग-सम्वेदना से प्रभावित और संचालित होता है ------ छायावाद और नयी कविता के सन्धि-स्थल पर किये गये उनके काव्यानुवाद जहाँ निराला के पीछे-पीछे चलता दिखाई देता है वहीं गद्यानुवाद के क्षेत्र में प्रेमचन्द के ।

आधार ग्रन्थ:रामविलास शर्मा के अनुवाद :

1.स्वामी विवेकानन्द,भक्ति और वेदांत,सरस्वती पुस्तक भंडार,लखनऊ,प्रथम संस्करण 1933.
वर्तमान उपलब्ध संस्करण: वाणी प्रकाशन,दिल्ली, आवृत्ति 2010.

2.स्वामी विवेकानन्द,कर्मयोग, सरस्वती पुस्तक भंडार, लखनऊ, प्रथम संस्करण 1936.
वर्तमान उपलब्ध संस्करण: वाणी प्रकाशन,दिल्ली, आवृत्ति 2007.

3. स्वामी विवेकानन्द,राजयोग, सरस्वती पुस्तक भंडार, लखनऊ, प्रथम संस्करण 1936.
वर्तमान उपलब्ध संस्करण: वाणी प्रकाशन,दिल्ली, द्वितीय आवृत्ति 2010.

4. स्वामी विवेकानन्द,पतंजलि के योगसूत्र, सरस्वती पुस्तक भंडार, लखनऊ, प्रथम संस्करण 1936.
वर्तमान उपलब्ध संस्करण: राजयोग,वाणी प्रकाशन,दिल्ली, द्वितीय आवृत्ति 2010

5.विवेकानन्द की दो कविताएँ---- सन्यासी का गीत एवं जाग्रत देश से (1936),वर्तमान उपलब्ध संस्करण:बुद्ध वैराग्य तथा प्रारम्भिक कविताएँ,वाणी प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण,1997,पृ.54-59

6.काजी नजरूल इस्लाम,विद्रोही(1937), वर्तमान उपलब्ध संस्करण:रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि,वाणी प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण,1990,पृ.97-100
7.सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास,पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण,1943.
वर्तमान उपलब्ध संस्करण:कामगार प्रकाशन,दिल्ली,पाचवाँ संस्करण 2001.
8. रजनी पाम दत्त, आज का भारत , जन प्रकाशन गृह,बम्बई,प्रथम संस्करण,1947
वर्तमान उपलब्ध संस्करण:ग्रंथ शिल्पी,दिल्ली,पुनर्मुद्रण, 2004.
9.माओ त्से-तुंग ग्रंथावली,भाग पहला,पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड,नई दिल्ली,प्रथम हिन्दी संस्करण, 1957
10. निकोला वाप्सारोव की कविताएँ,अखिल भारत शांति परिषद,प्रथम संस्करण,1959
वर्तमान उपलब्ध संस्करण:रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि,वाणी प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण,1990,पृ.103-48
11.कार्ल मार्क्स,पूँजी,खंड दो,प्रगति प्रकाशन,मास्को,प्रथम संस्करण,1979
वर्तमान उपलब्ध संस्करण :प्रगति प्रकाशन मास्को,दूसरा संस्करण,1987.

रामविलास शर्मा के अनुपलब्ध अनूदित ग्रंथ:

1.मार्क्सवाद के सिद्धांत,(लेनिन के पाँच निबन्धों का संकलन),1947.(व्यौरे के लिए देखें,'आज का भारत',ग्रंथशिल्पी का प्रकाशक की ओर से)
2. निकेतिन का अर्थशास्त्र,अप्रकाशित(व्यौरे के लिए देखें,अपनी धरती अपने लोग,खंड एक,पृ.167)

सन्दर्भ एवं टिप्पणी

1.Sujeet Mukherjee,Translation as Discovery, Orient Longman Pvt.Ltd,Reprint 2006,p125

2.Christina Schaffner, Politics and Translation, in Piotr Kuhiwczak and Karin Littau (eds.), A Companion to Translation Studies, Orient Blackswan, 2011, p.139.

3.रामविलास शर्मा,अपनी धरती अपने लोग,खंड एक,किताब घर,दिल्ली,प्रथम संस्करण 1996,पृ.76.

4.http://www.vivekananda.net/Lectures/ToAsk/MyMaster.html

5.स्वामी विवेकानन्द,भक्ति और वेदांत,अनु.रामविलास शर्मा,वाणी प्रकाशन,दिल्ली, आवृत्ति 2010,पृ.9

6.सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास,कामगार प्रकाशन,दिल्ली,चौथा संस्करण 1984.

7.वही,पृ.160

8. वही,पृ.258

9.रजनी पाम दत्त,आज का भारत ,ग्रंथ शिल्पी,दिल्ली,पुनर्मुद्रण, 2004,पृ.1x

10. वही,प्रकाशक की ओर से

11. वही,पृ.115-116

12. वही,पृ.34

13. वही,पृ.39

14. रजनी पाम दत्त,भारत वर्तमान और भावी,पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस,चौथा हिन्दी संस्करण,फरवरी 2007,पृ.5

15. माओ त्से-तुंग ग्रंथावली,भाग पहला,पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड,नई दिल्ली,प्रथम हिन्दी संस्करण, 1957

16. http://www.marx2mao.com/Mao/AC26.html

17.माओ त्से-तुंग ग्रंथावली.भाग दो,पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस ,नई दिल्ली,प्रथम हिन्दी संस्करण,1957,पृ.1

18.माओ त्सेतुंग की संकलित रचनाएँ,भाग एक,विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह,पेकिंग 1971,पृ.3

19.माओ त्से-तुंग की रचनाएँ,प्रतिनिधि चयन,राहुल फाउंडेशन,लखनऊ,संस्करण 2004,पृ.11

20. कार्ल मार्क्स,पूँजी,खंड दो,प्रगति प्रकाशन,दूसरा संस्करण,1987,पृ.5.

21.http://www.marxists.org/archive/marx/works/1885-c2/ch00.htm

22. कार्ल मार्क्स, वही,पृ.11

23. http://www.marxists.org/archive/marx/works/1885-c2/ch01.htm#1

24. पूंजी, वही,पृ.34

25. विश्वनाथ त्रिपाठी,अरूण प्रकाश(सं)वसुधा ,अंक 51,पृ. 380
26. सदानन्द साही(सं),साखी,अंक 20
27. मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन,दिल्ली,तृतीय संस्करण 2007, पृ.130
28. http://www.vivekananda.net/Poetry/SongOfSanyasin.html
29.रामविलास शर्मा,बुद्ध- वैराग्य तथा प्रारम्भिक कविताएँ,वाणी प्रकाशन,प्रथम संस्करण 1977,पृ.54
30. वही,पृ.7
31.सुमित्रानन्दन पंत ग्रंथावली,खंड दो,(स्वर्ण धूलि),राजकमल प्रकाशन दिल्ली,प्रथम संस्करण 1979,पृ.289.
32. http://www.vivekananda.net/Poetry/AwakenedIndia.html
33. रामविलास शर्मा,बुद्ध- वैराग्य तथा प्रारम्भिक कविताएँ ,वही,पृ.58
34.रामविलास शर्मा,रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि,वाणी प्रकाशन,दिल्ली,प्रथम संस्करण,1990,प्र.97
35.सुकुमार सेन (सं),बंगला कविता समुच्चय, साहित्य अकादमी, पुनर्मुद्रण 2001,पृ.364
36.रामविलास शर्मा,रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि,वही,पृ.103-4
37. अनुवाद कर्म की जटिलताएँ,वसुधा51,पृ.362
38. http://www.revolutionarydemocracy.org/rdv6n1/vaptsarov.htm
39. रामविलास शर्मा,रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि,वही,पृ.107-8
40.http://www.revolutionarydemocracy.org/rdv6n1/vaptsarov.htm
41.रामविलास शर्मा,रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि,वही,पृ.130
42. http://www.revolutionarydemocracy.org/rdv6n1/vaptsarov.htm
43. रामविलास शर्मा,रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि,वही,पृ.117-118
44.वही,पृ.104
45.Andre lefevere, Translation, Rewriting and the Manipulation of Literary Fame, Routledge, London, First Published 1992,p.v11
46. रामविलास शर्मा,अपनी धरती अपने लोग,खंड एक,वही, पृ.167.

रमण सिन्हा
भारतीय भाषा केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली----110067